प्रथम संस्करण की भूमिका

यह नाटक इब्राहीम अल्काजी के साथ इस बातचीत के बाद लिखा गया था कि हिंदी में आम आदमी का समसामयिक नाटक नहीं है। इसके लिखे जाने पर उनके राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की नाट्य मंडली ने इसे दो दिन कुछ आमंत्रित लोगों के सामने खेला भी लेकिन किन्हीं अज्ञात कारणों से विधिवत् प्रदर्शन नहीं किया गया। बाद में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के ही एक छात्र रणजीत कपूर ने इसे लखनऊ में प्रस्तुत किया जहां इसकी प्रस्तुति को राज्य की नाटक अकादेमी ने पुरस्कृत भी किया।

लिखे जाने और खेले जाने के दौरान नाटक के आलेख में रूप की दृष्टि से कुछ परिवर्तन हुए, कुछ और भी जुड़ा। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय और लखनऊ की प्रस्तुति में वे जुड़े हुए अंश नहीं खेले गये। इसे संपूर्ण रूप में प्रस्तुत करने के लिए आलेख कविता नागपाल ने ले लिया और इसे जन नाट्य मंच द्वारा प्रस्तुत करने का बीड़ा उन्होंने उठाया। उसी समय संयोग से श्रीकान्त व्यास से भेंट हुई और उन्होंने इसे तुरत छापने में उत्साह दिखाया। फलस्वरूप इसका प्रकाशन और प्रथम बार संपूर्ण मंचन साथ-साथ हो रहा है।

नाटक में अनेक रूपगत परिवर्तनों और परिवर्द्धनों के लिए लेखक कुमारी ज्योति देशपांडे, भानुभारती और कविता नागपाल का कृतज्ञ है। जिस लगन और परिश्रम से ज्योति देशपांडे ने राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में इसका निर्देशन किया वह समस्त अदेखा ही रह गया, यह खेद की बात है।

यह नाटक न लिखा जाता : (१) यदि हिंदी में कोई ऐसा नाटक होता जिसमें जन चेतना को लोकभाषा और लोकरूपों के माध्यम से सामाजिक अन्याय के साथ जोड़ने का एक नया व्याकरण देखने को मिलता। (२) यदि हिंदी के तथाकथित श्रेष्ठ नाटक बड़े प्रेक्षागृहों, भारी तामझाम और विद्वत् प्रेक्षक समाज के मुहताज न होते। (३) यदि हिंदी के नाटककार यश:प्रार्थी न होकर आम आदमी की पीड़ा, आम आदमी की जबान में आम आदमी के बीच ले जाना हिंदी रंगमंच के लिए आज अनिवार्य मानते।

यह नाटक जितना ही गांवों, कस्बों, मजदूर बस्तियों और स्कूलों-कालेजों में खेला जायगा उतना ही इसका उद्देश्य पूरा होगा।

—लेखक

श्री

प्रथम संस्करण में निर्देशक की बात के

पिछले दिनों तेजी से गहराते आर्थिक और राजनीतिक संकट के परिणाम-स्वरूप उभरे जन-आंदोलनों का असर सांस्कृतिक और साहित्यिक क्षेत्र में अनिवार्यतः हुआ है। महानगरों में छोटी-छोटी मंडलियां नाटक को आम जनता के बीच ले जाने का प्रयास करने लगी हैं। जाहिर है कि ये छुटपुट प्रयास अभी किसी संगठित आंदोलन का रूप नहीं ले पाए हैं। पर एक सिलसिला तो शुरू हो ही गया है।

'बकरी' का शिल्प लोचपूर्ण है। इसे नौटंकी और पारसी थियेटर के शैलीगत प्रवाह में बांधा गया है। लेकिन जहां नौटंकी में साहसिक घटनाओं, पौराणिक और ऐतिहासिक प्रसंगों के अतिरंजित रूप आम जनता को मनोरंजित करते हैं, वहीं 'बकरी' का विशेष कथ्य उसे पारंपरिक नौटंकी शैली से थोड़ा-सा हटाता हुआ एक तीखा सामाजिक व्यंग्य बना देता है। इस व्यंग्य को और तीखा बनाने के लिए नाटककार ने पारसी रंगमंच और पुरानी नौटंकी की लोकप्रिय धुनों का उपयोग किया है, जिसके लिए भाषा की आम मुहावरेदारी और लयात्मकता बुनियाद का काम करती है।

व्यवस्था के समकालीन राजनीति के छद्म और उसके जनविरोधी एवं जनतंत्र विरोधी चरित्र पर प्रहार करता हुआ यह नाटक जनता, विशेष कर ग्रामीण जनता पर लादी गई धर्मांधता और उसमें होने वाले शोषण-उत्पीड़न का चित्रण करते हुए एक ऐसे गुस्से का रेखांकन करता है, जिसे यदि समग्र यथार्थ से जोड़कर देखा जाए तो जनवादी चेतना के प्रसार में सहायक हो सकता है।

हमने यह नाटक विकसित रंगमंच की पूरी क्षमता को ध्यान में रखकर न तैयार करके खुले मंच के लिए तैयार किया है जिससे कि यह किसी भी स्थान पर, किसी भी समय कम से कम खर्च में, ज्यादा से ज्यादा लोगों के सामने खेला जा सके, लेखन और मंचन एक दूसरे के उद्देश्य के पूरक हो सकें और हिंदी नाटक को एक नया रूप देने की ऊपरी वाहवाही से बचकर एक सही धारा को आगे बढ़ाने में हम अपना छोटा-सा योग दे सकें।

—कविता नागपाल

नाटक के प्रकाशनोद्घाटन के अवसर पर 'जन नाट्य मंच' द्वारा १३ जुलाई १९७४ को त्रिवेणी कला संगम, नई दिल्ली की उद्यान रंगशाला में आयोजित प्रथम प्रस्तुति के पात्रों का भूमिका सहित परिचय :

नट	:	अनिलकुमार
नटी	:	कविता नागपाल
भिश्ती	:	अनिलकुमार
दुर्जनसिंह	:	पंकज कपूर
कर्मवीर	:	राकेश सक्सेना
सत्यवीर	:	मनीश मनोजा
सिपाही	:	सुभाष त्यागी
विपती	:	शैहला हाशमी/अतिया बख्त
युवक	:	सफदर हाशमी

ग्रामीण जन

काका	:	अरुण शर्मा
काकी	:	अतिया बख्त/शैहला हाशमी
चाचा	:	देवाशीष घोष
राम	:	बिज सोनक
एक ग्रामीण	:	दीपकचन्द
दूसरा ग्रामीण	:	उम्मेदसिंह

●

निर्देशक	:	कविता नागपाल
संगीत	:	मोहन उपरैती
नृत्य संरचना	:	भगवतीचरण शर्मा

[नट विद्रोही है। उसे मंगलाचरण पर यकीन नहीं। सारी मंडली मंगलाचरण गाना शुरू करती है। नट चुप रहता है। नटी के आँखें तरेरने पर वह गाता है पर उसे राजनीतिक संदर्भ से जोड़ देता है। गायन शैली : नौटंकी।]

नटी : (समवेत) दोहा

सदा भवानी दाहिने सम्मुख रहें गणेश
पांच देव रक्षा करें, ब्रह्मा, विष्णु, महेश।

नट : पांच देव सम पांच दल, लगी ढोंग की रेस
जिनके कारण हो गया देश आज परदेस।

नटी : (समवेत) चौबोला

करूं स्वांग प्रारंभ आसरो हमको मातु तुम्हारो
मझधारों के बीच भंवर में डोंगा पड़ो हमारो।

नट : अनल कंठ में भरो, सकल कायरता जड़ता जारो
जन मन संशय हरो, दैन्य, दानव, दुर्दिन संहारो।

दौड़

मुक्ति की हो अभिलाषा, जगे समता की भाषा।

नटी : तुम्हारे पद सिर नाऊं
अभिनव रूपनाट्य के तेरे चरनन फूल चढ़ाऊं।

बहरे तबील

नट : ऐसा नाटक तू हम से कराए है क्या,
जिसमें आती कहीं तुक नजर ही नहीं।

नाटक के प्रकाशनोद्घाटन के अवसर पर 'जन नाट्य मंच' द्वारा १३ जुलाई १९७४ को त्रिवेणी कला संगम, नई दिल्ली की उद्यान रंगशाला में आयोजित प्रथम प्रस्तुति के पात्रों का भूमिका सहित परिचय :

नट	:	अनिलकुमार
नटी	:	कविता नागपाल
भिश्ती	:	अनिलकुमार
दुर्जनसिंह	:	पंकज कपूर
कर्मवीर	:	राकेश सक्सेना
सत्यवीर	:	मनीश मनोजा
सिपाही	:	सुभाष त्यागी
विपती	:	सोहेला हाशमी/अतिया बख्त
युवक	:	सफदर हाशमी

ग्रामीण जन

काका	:	अरुण शर्मा
काकी	:	अतिया बख्त/सोहेला हाशमी
चाचा	:	देवाशीष घोष
राम	:	विज सोनक
एक ग्रामीण	:	दीपकचन्द
दूसरा ग्रामीण	:	उम्मेदसिंह

•

निर्देशक	:	कविता नागपाल
संगीत	:	मोहन उप्रेती
नृत्य संरचना	:	भगवतीचरण शर्मा

[नट विद्रोही है। उसे मंगलाचरण पर यकीन नहीं। सारी मंडली मंगलाचरण गाना शुरू करती है। नट चुप रहता है। नटी के आखें तरेरने पर वह गाता है पर उसे राजनीतिक संदर्भ से जोड़ देता है। गायन शैली : नौटंकी।]

नटी : (समवेत) दोहा

सदा भवानी दाहिने सम्मुख रहें गणेश
पांच देव रक्षा करें, ब्रह्मा, विष्णु, महेश।

नट : पांच देव सम पांच दल, लगी द्वेष की रेस
जिनके कारण हो गया देश आज परदेस।

नटी : (समवेत) चौबोला

करूं स्वांग प्रारंभ आसरो हमको मातु तुम्हारो
मझधारों के बीच भंवर मे डोंगा पड़ो हमारो।

नट : अनल कंठ मे भरो, सकल कायरता जड़ता जारो
जन मन संशय हरो, दैन्य, दानव, दुर्दिन महारो।

दौड़

मुक्ति की हो अभिलाषा, जगे समता की भाषा।

नटी : तुम्हारे पद सिर नाऊं
अभिनव रूपनाट्य के तेरे चरनन फूल चढ़ाऊं।

बहरे तबील

नट : ऐसा नाटक तू हम से कराए है क्या,
जिसमे आती कहीं तुक नजर ही नहीं।

रूप के सूप में बात उड़ जाए है
सत्य क्या है, है इसकी खबर ही नहीं।

नटी : (नाराज होकर) सत्य ? क्या है सत्य ?

नट : नहीं जानती ? तब तो···

व्यंग्य से देखता है और हाथ जोड़कर गाता है। साथ सभी गाते हैं, नटी को छोड़कर।

वंदना

हे संकट मोचू
बना दे हमें पोचू।
अपना सिर नोचू न उनका मुंह नोचू।
हे संकट मोचू···
किसकी रसोई में किसका कलेजा
कौन पकाए, कुछ भी न सोचूं।
हे संकट मोचू···
हों जड़भरत हमारे श्रोता
दर्द न छलके जितना खरोंचू।
हे संकट मोचू···
अर्थशून्य कर दो मम अंतर
शब्द पे शब्द निरन्तर खोंचू।
हे संकट मोचू···

नटी : वैसे ही नाटक खेलना मुश्किल होता जा रहा है। ऐसा गीत गाकर क्या हमारी मंच से ही छुट्टी कराओगे ?

नट : नहीं भवानी, यह तो वन्दना थी, मंगलाचरण। आम आदमी की हालत देखते हुए आम आदमी की ओर से।

नटी : (बात काटकर) आम आदमी को मारो गोली। जरा यहां के दर्शकों का भी तो ख्याल करो। बड़े शहर के सभी पढ़े लिखे समझदार लोग हैं। एक से एक अच्छे नाटक देखने के आदी। कुछ गठी हुई चीज पेश करनी चाहिए।

नट : गठी हुई चीज ? समझा नहीं। मतलब कही खरी सही बात दबा छिपा कर कहने से तो…

नटी : हां-हां, यही मतलब है। इनकी भाषा मे इसके लिए वह क्या शब्द है? कलात्मक…सुरुचिसंपन्न।

नट : कलात्मक यानी डब्बे मे डब्बा?

नटी : (चिढ़कर) हां, डब्बे मे डब्बा।

नट : (गाकर) डब्बे मे डब्बा। उसमें मुरब्बा
फिर भी है चोटी, या मेरे अब्बा!

नटी : (झुंझलाकर) यह मज़ाक नहीं है। कला सच्ची बात कहे कौन मना करता है? पर ज़रा ज़बान संभाल कर, मुंहफट होकर नहीं, गवारों की तरह।

नट : फिर हम गंवारों के बीच आते हैं—गवई-गाव मे। यहां नहीं होगा हम से नाटक। (जाने लगता है।)

नटी : (पकड़कर) क्यों शाम चौपट कर रहे हो? इतने भलेमानस आए हैं, कुछ तो ख्याल करो।

नट : मुझसे नही होगा।

नटी : होगा, क्यों नहीं होगा?

नट : मुझे डर लगने लगा है।

नटी : किससे?

नट : तुम्हारे दर्शकों से, तुमसे।

नटी : मुझसे, दर्शकों से?

नट : हां, तुम लोग लगता है सरकारी आदमी हो।

नटी : झूठ, मैं केवल नटी हूं। दर्शक केवल दर्शक। वे अच्छा नाटक देखना चाहते हैं। हम अच्छा नाटक खेलना चाहते हैं। इसीलिए तुम्हें खींचकर लाई हूं, बहुत कविता रचते थे, अब ज़रा मंच पर आओ।

नट : यानी नाटक का जो सजा-सजाया थान चला आ रहा है उसमे थोड़ी चटनी रख दें बस?

नटी : अरे बाबा फार्म…फार्म में थोड़ा बदलाव। सभी बड़े

नाटककार यह करते है।

नट - समझा, समझा। यह मुझसे नहीं होगा।

नटी : (रूठती हुई) जा मेरी तेरी ना पटनी।

नट : कैसी बनाई चटनी।

युगल गीत

जा मेरी तेरी मेरी ना पटनी
कैसी बनाई चटनी।
गाल बजाया पेट बजाया
जब से हुई छटनी।
जा मेरी तेरी ना पटनी···
कैसी अमीरी कैसी गरीबी
प्यारी लगे नटनी।
जा मेरी तेरी ना पटनी···
थोड़ी दिलासा बाकी निराशा
सारी उमर खटनी।
जा मेरी तेरी ना पटनी···
लोकतन्त्र की ले के पतुरिया
भाग गई जटनी।
जा मेरी तेरी ना पटनी···
हिंसा तेरी अहिंसा मेरी
रस्सी है बटनी।
जा तेरी मेरी ना पटनी···

दोनों अलग-अलग और मिलकर भी गाते हैं। नटी गाने पर भाव दिखा जाती है, नट गाते-गाते चुप हो जाता है।

नटी : चुप क्यों हो गए?

नट : बात फिर वहीं चली जाती है, मुझसे नाटक नहीं बनेगा।

नटी : न सही, कुछ तो बनेगा। (दर्शकों से) माफ कीजिएगा

बड़ा सिरफिरा आदमी है। इसका कोई ठीक नहीं। सीधे चल देगा। अब आप सब आ ही गए हैं। जैसा भी हो, जो भी हो, देखकर आइए। हमने तो सोचा था कवि है तो नाटक भी लिख लेगा।

नट : क्या समझावन-बुझावन हो रहा है ?

नटी : कुछ नहीं। दर्शकों को मजा आ रहा है। शुरू करो।

नट : तुम इतना मटक रही हो तो क्यों नहीं मजा आएगा ?

नटी . हां, इसी से तो बाक्स आफिस बनता है, शुरू करो।

नट : अच्छी बात है। तो एक मशक ला दो।

नटी : मशक ?

नट : हां।

नटी : (हैरत से) मशक ?

नट : (चिढ़कर) हां, मशक। मरी हुई बकरी की खाल जिसमें पानी भरकर…

नटी : हां समझ गई, समझ गई।

नट का मुंह देखती धीरे-धीरे प्रस्थान करती है।

पहला अंक

पहला दृश्य

[एक भिश्ती मशक लादे सड़क सींचता गा रहा है।]

बकरी को क्या पता था
मशक बन के रहेगी,
पानी भरेंगे लोग
औ' वह कुछ न कहेगी,
जा जा के सींच आएगी
हर एक की क्यारी,
मर कर के भी बुझाएगी
वह प्यास तुम्हारी।

मंच के कोने में खड़े तीन डाकू जैसे दीखने वाले खूंखार आदमी उसका गाना ध्यान से सुनते और कुछ सोचते हैं। भिश्ती प्रस्थान करते ही वे एक-दूसरे के कान में कुछ कहते हैं और गाने लगते हैं।

मुझे मिल गई मिल गई
मिल गई रे
मुझे मिल गई मिल गई

मिल गई रे
मिल गई मिल गई
मिल गई रे
मुझे मिल गई मिल गई
मिल गई रे।

एक सिपाही का प्रवेश।

सिपाही : क्या मिल गया ठाकुर ?

तीनों मगन होकर गाते रहते हैं।

सिपाही : (हैरत से) ऐसा क्या मिल गया भाई, हम भी जानें।

तीनों गाने में मगन हैं।

सिपाही : क्या हूर की परी मिल गई ?
तीनों : नहीं। फिर गाते हैं
सिपाही : बड़ा माल हाथ लग गया ?
तीनों : नहीं। फिर गाते हैं।
सिपाही : राजा, नवाब, सेठ, साहूकार फंस गया ?
तीनों : नहीं। गाते हैं।
सिपाही : सोना चांदी की खान मिल गई ?
तीनों : सोना भी मिल गया
चांदी भी मिल गई
राजा भी मिल गया
बांदी भी मिल गई।
मिल गई मिल गई
मिल गई रे
मुझे मिल गई मिल गई
मिल गई रे।
सिपाही : ताज्जुब है ! अरे कोई नया डाका डाला है ?
दुर्जनसिंह : होश में बात करो दीवान जी, अब हम डाकू नहीं, शरीफ आदमी हैं।
तीनों : और क्या !

होगा। मेरा क्या होगा, दुर्जनसिंह।

तीनों फिर गाने लगते हैं।

तीनों : कुर्सी भी मिल गई
सेवा भी मिल गई
माधव भी मिल गए
मेवा भी मिल गई
मिल गई मिल गई
मिल गई रे
मुझे मिल गई मिल गई
मिल गई रे।

सिपाही . (रोता रहता है) मेरा क्या होगा? हाय मेरा क्या होगा दुर्जनसिंह?

दुर्जन : वही जो हमारा होगा।

सिपाही : यानी?

दुर्जन : मज़े। (मूछों पर ताव देता है) मज़े, खूब मज़े!

सिपाही : मज़े?

दुर्जन : हां मज़े।

गाता है।

सुबह औ शाम बोलेगा
मजा तुम से ये मिमिया कर
हमारी गली से दीवाना जी
जाना न तुम आकर।
है ऐसा क्या मेरी सोहबत मे
जो तुम पा नहीं सकते
छुड़ाकर हाथ दामन से
हमारे जा नहीं सकते।

सिपाही : (रिरियाकर) साफ़-साफ़ बताओ दुर्जनसिंह। मेरी कुछ समझ में नहीं आता।

दुर्जन : ये समझने की न बातें है न समझाने की
उल्टी आवाज सुनो बकरी के मिमियाने की।
उसकी आवाज के जादू को जरा पहचानो
सिर झुकाओ, चलो मिट्टी को भी सोना मानो।

तीनों : मुझे मिल गई मिल गई
मिल गई रे
मुझे मिल गई, मिल गई
मिल गई रे।

सिपाही : (रूठकर बैठ जाता है) जाओ।

दुर्जन : दीवान जी इस तरह मत बैठो। तुम भी हमारे साथ गाओ गाओ।

सिपाही : मैं समझ गया अब तुम लोग हमें अपना नहीं मानते।

दुर्जन : यह कैसे हो सकता है दीवान जी। तुम तब भी हमारे थे अब भी हमारे हो।
तेरी किरपा के बिना, हे प्रभु मंगलमूल,
पत्ता तक हिलता नहीं, फले न कोई फूल।

सिपाही : बातें मत बनाओ। साफ-साफ बताओ क्या मिल गई ?

दुर्जन : (दोनों साथियों से) बता दें ?

कर्मवीर : बता दो।

दुर्जन : सच बता दें ?

सत्यवीर : बता दो, दीवान जी अपने ही आदमी हैं।

दुर्जन : तो सुनो दीवान जी।

सिपाही : हां।

दुर्जन : बहुत सुन्दर, बहुत नेक, बहुत अच्छी (रुककर) एक तरकीब मिल गई।

दोनों : नायाब तरकीब।

सिपाही : (फिर रोने लगता है) हाय! उससे क्या होगा। इससे तो लूटपाट करते थे वही भला था।

तीनों : उसी से सब कुछ होगा दीवान जी।

दुर्जन : हम मालामाल होंगे।
सत्यवीर : हमारी इज्जत होगी।
कर्मवीर : जनता हमारे इशारे पर चलेगी।
सिपाही : (उछलकर) मालामाल होंगे?
तीनों : शर्तिया मालामाल होंगे!
सिपाही : तब बताओ तरकीब।
दुर्जन : पहले एक बकरी ले आओ।
सिपाही : बकरी?
दुर्जन : हां हां, बकरी।
सिपाही : पर…
दुर्जन : जो भी, जहां भी, जैसी भी मिले।

सिपाही का प्रस्थान। भिश्ती का फिर मशक लिए पानी छिड़कते गाते प्रवेश।

भिश्ती :
बकरी को क्या पता था मशक बन के रहेगी,
जन्नत को बख्श करके भी खुद नर्क रहेगी।
चुटकी में दूसरों के उसका भाव रहेगा,
कल खून बहाया था आज पानी बहेगा।

भिश्ती का गाते हुए प्रस्थान। दूसरी ओर से सिपाही का बकरी लिए प्रवेश।

दुर्जन : *शाबाश! यह हुई न बात। अब बताइए दीवान जी यह क्या है?*
सिपाही : बकरी।
दुर्जन : किसकी बकरी?
सिपाही : गांव के हरिजन की।
दुर्जन : नहीं, बिलकुल गलत।
सिपाही : फिर?
दुर्जन : यह गांधी जी की बकरी है।

सिपाही : गांधी जी की ?

दुर्जन : हां, हां, महात्मा गांधी की, मोहनदास कर्मचंद गांधी। अच्छा बताओ यह क्या देती है ?

सिपाही : दूध।

दुर्जन : नहीं। कुर्सी, धन और प्रतिष्ठा। (कुछ रुककर) अच्छा बताओ, यह क्या खाती है ?

सिपाही : घास।

दुर्जन : नहीं, बुद्धि, बहादुरी और विवेक। यह गांधी जी की बकरी है।

दोनों : (नाचते गाते हैं)

उह करी न नह करी
गांधी जी की बकरी,
हर किला फतह करी
गांधी जी की बकरी,
शत्रु को जिबह करी
गांधी जी की बकरी।

दुर्जन : दीवान जी ! एलान कर दो, हमें गांधी जी की बकरी मिल गई है। लोग दर्शन करने आएं, पर खाली हाथ नहीं।

दोनों : साथ में कुछ लाएं, धन दौलत, रुपया पैसा।

सिपाही : पर लोग मानेंगे कैसे कि यह गांधी जी की बकरी है ?

दोनों : हम मानेंगे तो लोग भी मानेंगे। अपना मन चंगा, कठौती में गंगा।

दुर्जन : यूं समझो दीवान जी कि इस बकरी की मां की मां की मां की…

दोनों : मां की मां की मां की मां की मां की मां की मां की…

दुर्जन : मां, गांधी जी के पास थी।

सिपाही : (उछलकर) समझ गया। जब कुत्तों का खानदान होता है तो बकरी का क्यों नहीं हो सकता ?

दुर्जन : यह हुई न समझदारी की बात। दीवान जी, यह गांधी जी

की बकरी है। इसकी हम प्रतिष्ठा करेंगे।

तीनों मिलकर एक मंडप बनाते हैं। सामान दीवान जी लाते हैं। बकरी के गले में फूलमालाएं पहनाते हैं और उसे मंडप में प्रतिष्ठित करते हैं। मंडप पर एक साइनबोर्ड लगा देते हैं 'लोक सेवा सदन'। साथ गाते जाते हैं।

गायन

सोने की छत हो, चांदी के खम्बे
जय जगदम्बे, जय जगदम्बे।
सोओ प्रभुजी, लाल के खम्बे
जय जगदम्बे, जय जगदम्बे।
चाहे हो दिल्ली, चाहे हो बम्बई
जय जगदम्बे, जय जगदम्बे।

दुर्जन : दीवान जी! अब हम जाते हैं। आप बकरी के पास किसी को फटकने न दो। कोई पूछे बोलो, यह गांधी जी की बकरी है। हर सवाल का हल इसके पास है।

दोनों : पर जो खाली हाथ आए?

दुर्जन : वह वापस जाए।

तीनों जाते हैं। सिपाही अकेला रह जाता है। झंडा उठाकर गाता है।

झंडा गीत

झंडा ऊंचा रहे हमारा
सबसे प्यारा सबसे न्यारा।
झंडा ऊंचा रहे हमारा।
सुख सुविधा बरसाने वाला
शक्ति सुधा बरसाने वाला
प्रभुता सत्ता का रखवारा
झंडा ऊंचा रहे हमारा।

इस डंडे को लेकर निर्दय
हो स्वतंत्र हम विचरें निर्भय
बोलो शक्ति प्रदाता की जय।
दीन दुःखी का ताड़न हारा।
डंडा ऊंचा रहे हमारा।

एक गरीब औरत का प्रवेश।

औरत : उर्र, उर्र, उर्र! अरे मिल गई, मिल गई! हुजूर, ई बकरी हमार है। इहा कौन बांध लावा?

सिपाही : बकवास बंद करो। यह गांधी जी की बकरी है।

औरत : नाहीं हुजूर, हम पाला पोसा है। ई हमार है।

सिपाही : तेरा दिमाग फिर गया है? तू इसको मामूली बकरी समझती है? यह गांधी महात्मा की बकरी है। यहां से दफा हो, वरना इस बकरी को बिना खाना-पीना दिए कमज़ोर कर मार डालने की साज़िश पर भारत सुरक्षा कानून के अंदर तू हवालात की हवा खाएगी। इस बकरी की जो हालत तूने कर रखी है वह कितना बड़ा जुर्म है, जानती है तू?

औरत : पर हुजूर, अभी तो हमरे घर पर रही। हम खिलाय-पिलाय के…

सिपाही : क्या खिलाया इसको?

औरत : आज? आज पीपल का पत्ता छोटा सरिका…

सिपाही : (कड़ककर) पीपल का पत्ता? गांधी जी की बकरी पीपल का पत्ता खाती थी? फल खाती थी फल! ये देख क्या ला रही है।

कुछ केले के छिलके उठाकर दिखाता है।

औरत : (घबराकर कांपने लगती है) पर हुजूर…

सिपाही : जानती है यह कितने की बकरी है?

औरत : जमींदार साहब बीस रुपिया देत रहेन, हम नाहीं दिया, हम को, बच्चों को, जान से पियारी है। हम गरीब आदमी

औरत : ई सच है सरकार। हमरे ही घर ई पैदा भई, हम ही एहका पाला पोसा, रात-दिन साथ रही। बच्चों के साथ सोई, खेली, बड़ी हुई।

सत्यवीर : औरत, कबीरदास कह गए हैं 'ई जग अंधा मैं केहि समझाऊं' ! बोल तूने इससे क्या सीखा ?

औरत : हम अपढ़ और गरीब हैं हुजूर, क्या सीखें ?

सत्यवीर : इस बकरी ने तुमसे यह नहीं कहा कि पढ़-लिख, अपने पैरों पर खड़ा होना सीख। किसी का मुंह न देख। अपने बच्चों को भी इस लायक बना कि वे अपने हाथ से कमा सकें। कम से कम में घर चला। फालतू खर्च मत कर। दूसरों की सेवा कर। सच बोल। त्याग कर। सबको अपना समझ···

औरत : नाहीं हुजूर।

सत्यवीर : फिर यह तेरी बकरी कैसे हुई ? जब इसने तुमसे कुछ कहा ही नहीं, फिर तेरी कैसे हुई ?

औरत : हुजूर हम एह की हुई-एक बात समझत हैं। हम जानत हैं हुजूर कि ई कब खूटे से खुलना चाहे, कब दूब चरना चाहे, कब पीपल के पत्ते खाना चाहे, कब जामुन के।

सत्यवीर : इसीलिए कह रही है तू कि यह तेरी बकरी है ? पेट से ज्यादा तूने कुछ पहचाना ही नहीं। जा चली जा यहां से ! तू इस लायक नहीं कि गांधीजी की बकरी पाल सके। यह बकरी तेरे यहां रही जरूर पर यह न तेरी कभी हो सकी, न होगी।

सिपाही : हुजूर, भारतीय सुरक्षा कानून के अंतर्गत···

औरत : हम आपनी बकरी लेके जाएंगे।

सिपाही : औरत होश में बात कर।

औरत : होश में न का बेहोश हई ? ई बकरी हमार है !

सिपाही : इसकी है, भाग यहां से।

धकेलकर खींचता है। औरत अपने को

छुड़ाती है, हाथ जोड़कर घिघियाती है।

औरत : आप बड़े लोग हैं हुजूर। आपको एक नहीं हजार बकरी मिल जाएगी। हम गरीब का सहारा न छीनो।

सत्यवीर : गरीबी! (हंसता है) इस बकरी ने तुझे नहीं बताया कि गरीबी केवल मन की होती है, गरीबी केवल विचारों की होती है, दृष्टि की होती है। जानती है औरत, गांधी जी केवल छः पैसे में गुजर करते थे।

औरत : हम नाहीं जानित हुजूर।

कर्मवीर : क्यों नही जानती? यदि यह नही जानती तो आजाद देश में रहने का हक तुझे क्या है?

औरत : हम देश में नहीं रहित हुजूर, गाव में रहित है।

सत्यवीर लेकिन यह बकरी सारे देश की है।

औरत · नाहीं हुजूर। गाव में सब एहका पहचानत हैं, गाव की है।

सत्यवीर . औरत, बहस मत कर।

औरत : हम बहस के लायक नाहीं हुजूर। हमरी बकरी मिल जाए, हम चले जाएंगे।

सिपाही . हुक्म हो तो इसे भारत सुरक्षा कानून, निवारक नजरबंदी कानून, अपराध संहिता की बकरी धारा के अधीन···

दुर्जन : औरत यह बकरी तुझे नही मिलेगी। यह तेरी नही है।

औरत : हुजूर एहका छोड दें, हमरे पीछे-पीछे न लग जाए तो कौन सजा चोर की ऊ हमरी। आपके पीछे नाहीं आएगी हुजूर, हमरे पीछे आएगी।

दुर्जन : गांधी जी की बकरी तेरे पीछे आएगी? गवार के!

औरत : हां हुजूर। बड़ी मोहब्बती है। गांव में सब का चीन्हती है। सबके पीछे लग जाती है। सिवान से बाहर कबहू नहीं जाती।

दुर्जन : बुलाओ गांव वालों को।

औरत : अबहिने लाइत है।

औरत का प्रस्थान।

पहचानने की जरूरत है आपका हर दुख, हर तकलीफ यह हल कर सकती है।

एक ग्रामीण : हुजूर गांव मे सूखा पड़ा है।

दुर्जन : हां, उसे भी। इस बकरी के बताए रास्ते पर चलो, खेत लहलहाने लगेंगे।

दूसरा ग्रामीण : साहब पानी एक बूंद नहीं, कहीं नहीं।

दुर्जन : पानी जमीन फोड़कर अपने आप निकलेगा।

तीसरा ग्रामीण : मालिक, महामारी फैल रही है। आदमी, मवेशी पटापट मर रहे हैं।

दुर्जन : यह इसलिए कि इस पर जुल्म हुआ है।

चौथा ग्रामीण : सरकार, कुआं सूख गया, पीने का पानी चार मील से लाते हैं।

दुर्जन : यदि यह बकरी इस औरत के पास रही तो कुआं क्या सब सूख जाएगा, आग बरसेगी, आग !

औरत : (रुआंसी होकर) यह झूठ है।

दुर्जन : अब आप फैसला करें, आप लोग कहें तो बकरी इस औरत को दे दें। फिर तबाही के जिम्मेदार हम नहीं। बोलिए, आप क्या कहते हैं ? बकरी शान से यहां सेवाश्रम में रहे या इस औरत के पास ?

एक ग्रामीण : (हाथ जोड़कर) आसरम मे राखें।

सभी ग्रामीण : आसरम मे राखें।

कर्मवीर : (जज की विग लगाकर) सिपाही, सार्वजनिक संपत्ति हड़पने के आरोप मे इस औरत को दफा एकतापू जीरो के अधीन दो साल सख्त कैद की सजा दी जाती है। साथ ही पांच सौ रुपया जुर्माना। न देने पर [illegible] महीने की कैद बामशक्कत।

सिपाही औरत को हथकड़ी लगाकर ले जाता है। औरत 'ई अनियाय है, जुलुम है, बकरी हमार है, तुम सबे

हमारे दुश्मन हों' चिल्लाती है। उसकी आवाज़ गांधी जी की जयजयकार में डूब जाती है।

दुर्जन : प्यारे भाइयो! हमें आपकी समझदारी पर भरोसा था। अब आप यहां से खाली हाथ न जाएं। यहां से अब खाली हाथ कोई नहीं जाएगा। आपको जो मानता मानना हो मानें, आपकी मनोकामना पूरी होगी। जो कुछ आपके पास है इस पर निछावर कर दें, जो कुछ है इस पर चढ़ाकर जाएं, सच्चे मन से। आपके संकट टल जाएंगे।

ग्रामीण एक-एक करके बकरी को दंडवत् करते हैं और कंठा-माला चढ़ाते हैं।

कर्मवीर : (कड़ककर) इस बकरी को इन फटे चीथड़ों की दरकार नहीं। अब समझा तुम लोगों की यह हालत क्यों है। तुम लोग तहस-नहस हो जाओगे। जाओ, निकल जाओ यहां से!

सभी ग्रामीण कांपने लगते हैं।

सत्यवीर : क्या मति मारी गई है तुम्हारी? कुछ रुपया-पैसा, सोना-चांदी चढ़ाओ।

एक ग्रामीण : हम पवन के पास कछू नहीं सरकार, सिवाय एक बिगहा जमीन के।

सत्यवीर : यहां किसके पास कुछ है? तुम लोग बकरी स्मारक निधि बनाओ। तुमसे नहीं होता, हम बनाएंगे। उसमें दान दो। जैसे भी हो, जितना भी हो। जो दान कष्ट उठाकर नहीं दिया जाता वह नहीं फलता।

कर्मवीर : इस पर सब मिलकर राय करो। निधि में काफी पैसा होना चाहिए। तुम्हारे कल्याण के लिए 'बकरी शांति प्रतिष्ठान', 'बकरी संस्थान', 'बकरी सेवा संघ', 'बकरी मंडल' बहुत-सी संस्थाएं बनानी हैं। तभी कुछ होगा।

एक ग्रामीण : लेकिन मुखिया...?

दुर्जन . यह चिन्ता तुम्हारी नहीं। तुम अपना कर्तव्य करो। बकरी अपना करेगी।

सभी ग्रामीण मुंह लटकाकर चले जाते हैं। दुर्जनसिंह, कर्मवीर, सत्यवीर सबका प्रस्थान।

(दृश्यलोप)

नट गायन

दौलत की है दरकार ए सरकार आपको,
सबको उजाड़ चाहिए घरबार आपको,
मक्कारी, ढोंग, छल, फरेब आप, बांटिए
बदले में मगर चाहिए एतबार आपको,
आदत जो पड़ गई है वो अब छूटती नहीं
कोई शिकार चाहिए हर बार आपको।

नटी का मटकते गाते प्रवेश।

नटी : जाल लेकर खड़े होना
न तुम पानी में,
जाल देखी यहां हर शय
मुझे हैरानी में।

नट : हम तो मछली के संग
घड़ियाल बांध लाएंगे,
जोश होता है कुछ ऐसा
भरी जवानी में।

दूसरा दृश्य

[चौपाल का दृश्य, शाम का समय, कुछ ग्रामीण विचारमग्न बैठे हैं। एक युवक का प्रवेश।]

युवक : (व्यंग्य से) किसका मुर्दा फूंककर बैठे हो ?

एक ग्रामीण : विपती का जेहल लै गए।

दूसरा : बकरियो छीन लीन्ही, ओहुको जेल दीन्ही।

युवक : और आप आशीर्वाद लीन्ही। आपने उन्हें बकरी क्यों दी ?

तीसरा : कहिन गांधी बाबा की है, तो हम काव करित ?

युवक : उन्होंने कहा और आपने मान लिया। काकी तुम भी चुप रहीं ?

ग्रामीण औरत : मरदन के बीच हम काव बोलित ?

युवक : ठीक है। कल को आप लोगों को भी जेहल ले जाएंगे। आज बकरी गांधी जी की हुई, कल को गाय कृष्ण जी की हो जाएगी, भैंस बलराम जी के हो जाएंगे। ये सब ठग हैं ठग…

एक ग्रामीण : ऊ हम जानित हैं…

युवक : फिर चुप क्यों रहे ? कहा क्यों नहीं कि बकरी विपती की है उसे दे दी जाए। विपती हथकड़ी पहने रोती-चिल्लाती जा रही थी। रास्ते में मैंने…

बकरी नाय है, देवी है। देवी का मान होवै कै चाही, अब हम का कहित देवी के मान न होय ?

युवक : हमारा ही जूता हमारे ही सिर ?

एक ग्रामीण : अरे, अब कौन प्रपंच करें, ऊ कहिन देवी है हम मान लिहा।

युवक : प्रपंच उन्होंने किया या आपने ?

दूसरा ग्रामीण : उनका प्रपंच ऊ जानें, भगवान जानें। भगवान उनका देखि हैं।

युवक : भगवान, भगवान। बस उसी की वजह से यह हालत है हमारी।

औरत : अब भगवान के न गरियाओ…

युवक : फिर किसे गरिआएं ?

औरत : अपने भाग के, अब उहै आपन नहि…

युवक : कैसे मालूम अपना नहीं।

औरत : आपन होत तो देखते-देखते बकरियो लै लेतै और विपती के जेहलो भेज देतै ?

युवक : इसमें भाग्य कहां से आता है। आपने दे दिया, उन्होंने ले लिया।

एक ग्रामीण : हम कौन होत हैं देन वाले ?

युवक : फिर किसने दिया ?

दूसरा ग्रामीण : ऊ कहिन देवी का आसरम मा राखें। कम कहा राखो। एह मा हमार काव कसूर ?

एक ग्रामीण : ऊ कहिन आसरम मा न रही तो अबर सूखा पड़ी, अउर आग बरसी।

औरत : महामारियो के डरवाइन।

युवक : और आप डर गए ?

एक ग्रामीण : (उत्तेजित होकर) अब डरवाइन तो काव करी ?

युवक : यह नहीं समझ में आया कि वो झूठ बोल रहे हैं ?

दूसरा ग्रामीण : (उत्तेजित होकर) समझेन, मुला झूठ ऊ बोलिन, हम तो

नाहीं बोला।

युवक : काका आप नहीं बोले तो ठीक, पर झूठ बोलने वाले से झूठ कहने वाला ज्यादा बड़ा पापी होता है।

एक ग्रामीण : (जोड़कर) चुप रहो। चार दिन से बिरादरी के बीच बैठत हो, जादू चले लागो। चार पुस्त लोंहु के देर हम मानित है। उनके झूठ उनके साथ जाई। हमार सच हमारे साथ। तुम पढ़न बच्चा नहिं न, जौन सिखाए बने हो।

युवक : तुम तो सही बात कहते हो काका, सिखाते नहीं।

दूसरा ग्रामीण : क्या नहीं है?

युवक : यही कि बकरी बकरी है, देवी नहीं। आडम्बर जाल है। ई सब चोर हैं, डाकू।

एक ग्रामीण : ए बच्चा, इ ना चोरी-डाकू के नहिं न? चोर डाकू के फैसला भगवान के हाथ होई। हमारे तोहारे हाथ नाहीं।

युवक : काका, अब क्या करें। उन्होंने हमें उल्लू बनाया है।

दूसरा ग्रामीण : हमें कोई उल्लू नहीं बनाये सकता। हम उल्लू नहिं न बनेन, ऊ उल्लू बनिन।

युवक : कैसे?

एक ग्रामीण : मान लो बकरी गांधी महात्मा की है। देवी है। हम देवी माना। सबके मन से माना। ऊ नाहीं मानिन। तो बताओ ऊ उल्लू बनिन की हम?

युवक : बकरी देवी हो तब न?

दूसरा ग्रामीण : मान लो कि है। फिर कौन उल्लू बना?

युवक : काका, उल्लू न ऊ बने, न आप। उल्लू हम बने जो आपसे इतना बहस किए।

ग्रामीण : बच्चा, अब हम पढ़े लिखे नहिं न। पढ़लिखन के मनो-भाव नहिं न। ऊ ठहरे बड़वार, हम ठहरे छोटवार। छोटन के कहना माने के परत है। कहना न मानें तो ठीक नाहीं। ऊ कहिन हम सिर झुकाय के मान लिहा। अब उनके करम उनके साथ। हमरे करम हमारे साथ।

देवी मानते हैं या नहीं ? साफ जवाब दीजिए ?

औरत : काहे न मानें ? मानो तो देव नाहीं पाथर।

युवक : आप सब लोग मानते हैं ?

सभी ग्रामीण : कैसे कहें नाही मानते।

युवक : (चिल्लाकर) साफ-साफ कहिए, मानते हैं ?

एक ग्रामीण : वरें हमरें कहे न कहे से काव होत है। सब कहत हैं सब मानत हैं। हम सबसे अलग थोड़े ही हैं।

युवक : मैं आसरम में आग लगाऊंगा।

दूसरा ग्रामीण : बेटा, तुम्हारा करम तुम्हारें साथ। आसरम में पुलीस है, पलटन है। ऊ बड़े लोगन की चीज है, हम छोटवार। ज्यादा सिर उठाय के हमें चलना ठीक नहीं। वैसे तुम जो चाहो करो। अपने मन के राजा हो।

युवक : मैं आज से आप लोगों को वहां नहीं जाने दूंगा। आप लोग वादा कीजिए, वहां नहीं जाएंगे।

एक ग्रामीण : हमसे काव वादा करउवत हो, हमरे तो मन वहीं बसे हैं। हम वहीं रमे हैं। जहां देवी वहां हम। अब चार दिन की उमर—गिरते पेड़ की काहे अब काटत हो। हम पचन की तो भली-बुरी निभ गई। दुइ दिन और सही। हा तुम्हारा मन न परै न जाओ। आसरम में आग लगाना ठीक नाहीं बेटा। आग लगाने को बहुत दुनिया परी है, क्यों भैय्या ?

सभी ग्रामीण सिर हिलाते हैं।

युवक : बाबा, हम समझा नहीं पा रहे हैं, ई सब ठग हैं, आप सबको सीधे आदमी जान ठगी करते हैं, देश में ई ठगी बहुत चल रही है। भूखा, महामारी, अन्न-जल की तबाही सब इन्हीं लोगों की वजह से है।

दूसरा ग्रामीण : ई लोग का भगवानो से बड़े हैं ?

युवक : हां, तबाही में भगवान से भी बड़े हैं।

एक ग्रामीण : तो इनहू कै पूजो भैया, जल मा रहि [illegible] मगर से बैर ?

युवक : हां पूरा, पर जुत से।

दूसरा ग्रामीण : ई गरम खून है बचवा जो चहुरात रहा है। जो बड़ा बनके आया वह बड़ा बनके रहेगा।

युवक : कोई छोटा-बड़ा बन के नहीं आया। सब बराबर बन के आए।

एक ग्रामीण : ए बेटा, एक ही खेत मे न सब धान एक-सा होत है, न एक थाली में सब दाना एक-सा।

युवक : लेकिन धान के खेत में सब धान ही होता है।

दूसरा ग्रामीण : खर पतवार भी होत है बेटा।

युवक : (तमतमाकर) हम खरपतवार नहीं हैं। हम भी इनसान हैं।

एक ग्रामीण : एह का कौन मना करता है?

युवक : जो उनको बड़ा कहता है।

दूसरा ग्रामीण : बरगद, बरगद है बेटा, पीपल पीपल, रेंड रेंड। पेड़ तैंत सब हैं। तुम ठीक कहत हो…

युवक : हमने जानबूझकर अपने को छोटा बनाया है।

एक ग्रामीण : तुम्हरे मुह में घी-शक्कर। तुम बड़ा बनके दिखाओ। छोटे मत रहो। देवी देवतन की किरपा तुम्हारे ऊपर रहे।

युवक : हमें किसी की कृपा नहीं चाहिए।

दूसरा ग्रामीण : तब देर काहे कर रहे हो? दौड़ि जाओ। बरगद से ऊपर निकल जाओ।

युवक : हमें न ऊपर जाना है न नीचे। बराबर रहना है।

एक ग्रामीण : कौनो ठिकाना नहि ना…

युवक : ठिकाना है, पर अभी आपकी समझ का फेर है।

सेओ से निकल जाता है। सभी ग्रामीण जाते हैं।

गायन

चिरई दाना बिन मुरझाए
मछरी पानी बिन अकुसाए,

खाए दोरस बा जीवन पर पुकारे हे हरी।

मानुष आपन कर्म लजाए
बैठा तीनहु लोक गंवाए
लाये नैय्या बीच सागर, कर दे पार हे हरी।

(दृश्यलोप)

बकरी मैया तोरे चरनन अरज करूं।
गाधी बाबा तोरे चरनन अरज करूं।
उन के महलिया
सोना बरसे
जनम जनम का मैं करज करूं
बकरी मैया तोरे चरनन अरज करूं।
पार लगा दे नैया
ओ बकरी मैया
दोऊ कर जोड़े अरज करूं
गाधी बाबा तोरे चरनन अरज करूं।

गाते हुए प्रस्थान।

दुर्जन : कर्मवीर ! अब इनके पास कुछ नहीं है। खुक्ख हैं साले।

कर्मवीर : फिर भी काफी चढ़ावा आ गया।

दुर्जन : हां, सो तो ठीक है। पर कुछ और उपाय भी…

कर्मवीर : ठीक कहते हो, दुर्जनसिंह।

सत्यवीर : उपाय बहुतेरे हैं, बस बकरी बनी रहे।

कर्मवीर : जैसे ?

सत्यवीर : मैं बकरीवाद पर भाषण देने विदेश जाता हूं। बकरीवाद का प्रचार करूंगा।

दुर्जन : शाबाश ! बहुत अच्छा विचार है। बकरीवाद और विश्व शांति। मानवता को आगे बढ़ाने का विचार। सारा विश्व हमारा है।

कर्मवीर : हम सारे विश्व के हैं। वसुधैव कुटुम्बकम्।

दुर्जन : पर तुम कर्मवीर ?

कर्मवीर : मैं चुनाव लड़ जाता हूं।

दुर्जन : पवित्र विचार है। जनसेवा। चुनाव जिताना, फिर मंत्री बनवाना—सब बकरी करवाएगी।

बगल पर हाथ मारता है।

दूसरा अंक

पहला दृश्य

[दो साल बाद। स्थान वही। पर समृद्धि का सूचक। एक कोने में कुछ बंदूकें रखी हैं। बकरी के मंडप को काली दीवारों से घेरकर ताला लगा दिया गया है,पर 'लोक सेवा मंडप' की तख्ती लटकी है। बीच की दीवार में से निकाल दूरदर्शक यंत्र की तरह दरवाज़े के पास एक छेद में लगा दिया गया है। ग्रामीण पंक्तिबद्ध एक-एक कर उसमें देखते हैं।]

एक ग्रामीण : कुछ लखात नाहीं हुजूर।

सिपाही : (डी॰ आई॰ जी॰ की पोशाक में आराम से टांग फैलाए) सबको नहीं दीखेगा। जिसने अच्छे कर्म किए होंगे उसी को दीखेगा।

बारी-बारी से सब देखते हैं और कुछ न दीखने पर हताश सिर हिलाते हैं।

दूसरा ग्रामीण : *एक बार दर्शन कराय देयं सरकार।*

सिपाही : कैसे करा दें। इन दो वर्षों में दिन-रात तुम लोगों ने उसे परेशान कर दिया। अब बकरी एकांत और आराम चाहती है। तुम लोगों का चेहरा देखते ही चिल्लाने लगती है, जैसे आदमियों से उसे नफरत हो गई हो।

ग्रामीण : एस नाहीं होय सकत सरकार।

सिपाही : तो क्या हम झूठ बोलते हैं ? देवी ने खुद कहा है। सब अपना काम करो। कर्मवीर को चुनाव लड़ने का हुक्म दिया है। उसे चुनाव चिह्न के रूप में स्वयं अपना धन दिया है। जान लो तुम सब लोग कर्मवीर को वोट दोगे। उसी की मार्फत तुम्हारा कल्याण होगा। भाग्य खुलेंगे।

ग्रामीण : हुजूर, दर्शनों को नाहीं मिलेगी ?

सिपाही : (झल्लाकर) दर्शन दर्शन, वह तुम लोगों का चेहरा तक देखना नहीं चाहती। जो कहा है वो याद रखो। वोट बकरी के थन को देना है। यदि अपना भला चाहते हो तो।

ग्रामीण : पर हम पचन हाथी को···जिमीदार साहब के लरिका पहिले भावा हैं, ऊ पहले ही···

सिपाही : हम कुछ सुनना नहीं चाहते। अपना फैसला हमने बता दिया। यदि वह नहीं,हुआ तो खैर नहीं,पर हमें देवी प्यारी है। उनका हुक्म, हुक्म है। यदि वह कोई सजा कहेगी तो वह भी हमें देनी होगी। जो बदमाशी करेगा उसे परलोक भी भेजा जा सकता है। उसकी कृपा से हम आदमी को ठीक करना जानते हैं। पर हम अपनी मर्जी से कुछ नहीं करेंगे। सब देवी के आदेश से होगा। हम सख्ती नहीं करना चाहते। अभी समय है। खूब सोच लो।

ग्रामीण : काव सोचें सरकार, हमरे ऊपर तो दोऊ तरफ से मार है। ···ईई बड़कवन के बीच हम कहां जाएं, काव करें ?

सिपाही : हम कुछ नहीं जानते।

एक ओर से युवक का और दूसरी ओर से कर्मवीर का प्रवेश, बकरी के थन का झंडा लिए। सिपाही तभी हवाई फायर करता है। ग्रामीण सकपका जाते हैं।

कर्मवीर : भाइयो, हमें आपकी कृपा चाहिए। यदि आपकी मर्जी न हो

दूसरा अंक

पहला दृश्य

[दो साल बाद। स्थान वही। पर समृद्धि का सूचक। एक कोने में कुछ बंदूकें रखी हैं। बकरी के मढ़ को चारों दीवारों से घेरकर ताला लगा दिया गया है, पर 'लोक सेवा मढ़' की तख्ती लटकी है। बीच की बगल में से निकाल दूरदर्शक यंत्र की तरह दरवाज़े के पास एक छेद में लगा दिया गया है। ग्रामीण पंक्तिबद्ध एक-एक बार उसमें देखते हैं।]

एक ग्रामीण : कुछ नजर आत नाहीं हुजूर।

सिपाही : (सी० आई० डी० की पोशाक में आराम से टांग फैलाए) सबको नहीं दीखेगा। जिसने अच्छे कर्म किए होंगे उसी को दीखेगा।

बारी-बारी से सब देखते हैं और कुछ न दीखने पर हताश सिर हिलाते हैं।

दूसरा ग्रामीण : एक बार दर्शन कराय देयं सरकार।

सिपाही : कैसे करा दें। इन दो वर्षों में दिन-रात तुम लोगों ने उसे परेशान कर दिया। अब बकरी एकांत और आराम चाहती है। तुम लोगों का चेहरा देखते ही चिल्लाने लगती है, जैसे आदमियों से उसे नफरत हो गई हो।

तीसरा ग्रामीण : एस नाहीं होय सबत सरकार।

सिपाही : तो क्या हम झूठ बोलते हैं ? देवी ने खुद कहा है। सब अपना काम करो। कर्मवीर को चुनाव लड़ने का हुक्म दिया है। उसे चुनाव चिह्न के रूप में स्वयं अपना धन दिया है। जान लो तुम सब लोग कर्मवीर को वोट दोगे। उसी की मार्फत तुम्हारा कल्याण होगा। भाग्य खुलेंगे।

एक ग्रामीण : हुजूर, दर्शनो को नाहीं मिलेगो ?

सिपाही : (झल्लाकर) दर्शन दर्शन, वह तुम लोगों का चेहरा तक देखना नहीं चाहती। जो कहा है वो याद रखो। वोट बकरी के धन को देना है। यदि अपना भला चाहते हो तो।

ग्रामीण : पर हम वचन हाथी को···जिमींदार साहब के लरिका पहिलै आया हैं, ऊ पहले ही···

सिपाही : हम कुछ सुनना नहीं चाहते। अपना फैसला हमने बता दिया। यदि यह नहीं,हुआ तो खैर नहीं,पर हमें देवी प्यारी है। उसका हुक्म, हुक्म है। यदि वह कोई सजा कहेगी तो वह भी हमें देनी होगी। जो बदमाशी करेगा उसे परलोक भी भेजा जा सकता है। उसकी कृपा से हम आदमी को ठीक करना जानते हैं, पर हम अपनी मर्जी से कुछ नहीं करेंगे। सब देवी के आदेश से होगा। हम सख्ती नहीं करना चाहते। अभी समय है। खूब सोच लो।

ग्रामीण : काव सोचें सरकार, हमरे ऊपर तो दोऊ तरफ से मार है। दुई बड़कवन के बीच हम कहां जाएं, काव करें ?

सिपाही : हम कुछ नहीं जानते।

एक ओर से युवक का और दूसरी ओर से कर्मवीर का प्रवेश, बकरी के थन का झंडा लिए। सिपाही तभी हवाई फायर करता है। ग्रामीण सकपका जाते हैं।

कर्मवीर : भाइयो, हमें आपकी कृपा चाहिए। यदि आपकी मर्जी न हो

जो हम चुनाव में न लड़े हों। आप लोग बैठिए, बैठिए।

ग्रामीण बैठते हैं।

युवक : हमारी मर्जी कहां चली?

कर्मवीर : हम जन्म के ठाकुर हैं, कर्म से ब्राह्मण और सेवक हरिजनों के हैं। हमें सबका वोट मिलना चाहिए।

सिपाही : जिसे न देना हो अभी साफ-साफ कह दो। धोखे में न रखो।

ग्रामीण चुपचाप सिर झुका लेते हैं।

सिपाही : शाबाश! हमें तुम से यही उम्मीद थी।

युवक : हम किसी को वोट नहीं देंगे।

सिपाही उसे निगाह से देखता है।

कर्मवीर : चुने जाने हो हम तुम्हारे गांव तक की सड़क पक्की करा देंगे। सड़क पर पानी नहीं भरेगा।

युवक : (स्वगत) सब यही कहते हैं।

एक ग्रामीण : और घर में मरवार?

कर्मवीर : उद्यम करो, घर में भी नहीं भरेगा। अच्छा भाइयो, जय हिंद। हमें दूसरी सभा में जाना है।

ग्रामीणों का प्रस्थान। सिपाही युवक को डंडे से रोक लेता है।

सिपाही : क्या कहता था, 'किसी को वोट नहीं देंगे।'

युवक : हां, किसी को नहीं।

सिपाही : क्यों?

युवक : यह सब बेकार का नाटक है, फरेब।

सिपाही : नाटक है? और यह नाटक कंपनी तेरे बाप खोल गए हैं। तेरे हिसाब से यहां सब चूतिये बसते हैं? दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है अपना।

युवक : और सबसे बड़ा दिखावा भी। पैसा और ताकत जिसके पास है···

कर्मवीर : जानते हो, यह बकरी मैय्या का आदेश है।

युवक : जानता हूं बकरी भी आप हैं, मैय्या भी आप हैं, आदेश भी आप।

कर्मवीर : कुछ पढ़ा है ?

युवक : सोहबत की है, असर कम नमीनगी ज्यादा पहचान लेता हूं।

सिपाही : ऐसी पहचान का इलाज हमारे पास है।

युवक : इलाज आपके पास हर चीज़ का है। गरीबी और अन्याय का नहीं है बस।

कर्मवीर : नकसलवादी है क्या बे ?

युवक : उसकी तो पहचान आपके पास है। मैं असलवादी हूं। असल बात कहता हूं।

कर्मवीर : क्या असल बात कहता है ?

युवक : यही कि वोट, चुनाव सब मज़ाक हो गया है। सब झूठ पर चल रहा है। गरीबों को बकरी पकड़कर उनसे पहले पैसा दुहा। अब वोट दुह रहे हैं, फिर पद और कुर्सी दुहेंगे।

सिपाही : यह असल अभी घुसा दूं ?

कर्मवीर : कितना पैसा दे रहा है वह हाथी वाला…

युवक : न हम पैसे के गुलाम हैं, न ताकत से डरते हैं।

सिपाही : (एक हंटर मारकर) डरते तो बड़े-बड़े हैं। कितने आदमी का गिरोह है तुम्हारा ?

युवक : हमारा कोई गिरोह नहीं।

कर्मवीर : झूठ बोलता है। यदि अकेला होता तो इतनी आवाज नहीं निकलती।

युवक : जिसके आवाज होती है उसकी अकेले होने पर भी निकलती है।

सिपाही : तुम्हारा इलाज आसान है। चुनाव खत्म होने तक तुम जेल में रहोगे।

कर्मवीर : तोड़फोड़ की सज़ा जानते हो ?

युवक : कौन-सी तोड़फोड़ ? हमने कोई तोड़फोड़ नहीं की है।

सिपाही : वोट की तोड़फोड़ कोई तोड़फोड़ नहीं ?

युवक : झूठ है। हमने अपने भीतर तोड़फोड़ की, वह भी पूरी नहीं। बाहर कुछ नहीं किया।

सिपाही : यह राजद्रोह है।

कर्मवीर : इसकी सजा के लिए मुकदमा भी जरूरी नहीं, जानता है?

युवक : जानता हूं। आप बकरी की पूजा इसलिए कराते हो ताकि सब बकरी बन जाएं। मैं बकरी नहीं हूं। किसी को बकरी नहीं बनूंगा।

सिपाही नहीं मान्ने तू भेड़िया है।

कर्मवीर : और भेड़िया खुला नहीं छोड़ा जाता। दीवान जी, इसे तब तक जेल में सड़ाओ जब तक बकरी न बन जाए। हथियार बरामद कराओ माने के पास से।

सिपाही एक हाथ मारता है और बेरहमी से उसे घसीट बाहर छोड़ आता है। दुर्जनसिंह का प्रवेश। वह खादी छोड़कर कीमती कपड़ा पहने है। आते ही आराम कुर्सी पर लेट जाता है। पैर सिपाही की गोद में रख देता है। सिपाही एक जाम भर कर देता है।

सिपाही :

तमाम ह्विस्की तमाम रम
मिला करे प्रभु जनम जनम
हो संग कलेजी गरम गरम
औ' एक बाला नरम नरम।

दुर्जन : वाह, वाह दीवान जी क्या बात है! अब तुम पक्के शायर हो गए।

सिपाही : यह शायरी मेरी नहीं। यह तो मेरे बाप-दादों के जमाने से चली आ रही है। वे अंग्रेज हाकिमों के साथ बड़े ओहदों पर थे। पुराना सिलसिला है हुजूर। हर ओहदेदार सिपाही

इसे जानता है।

दुर्जन : जानता होगा। (एक सांस भरकर) पर तुम्हारे पुराने सिलसिले में भी जायका है। हमारा नया] सिलसिला भी बेस्वाद होता जा रहा है। (कुछ रुककर)

न कोई शान बाकी है
न कुछ अरमान बाकी है,
मगर फिर भी दरो दौलत पे
तेरी जान बाकी है।

(बकरी के स्थान की ओर देखकर) तो फिर, फतह कर्मवीर?

कर्मवीर . हां, फतह समझो। चिड़ी के बच्चे चूं भी नहीं कर सकते। सब हमें वोट देंगे। सिरफिरों को ठिकाने लगा दिया गया।

सिपाही ' अब भी जिस पर शुबहा होगा वो घर से नहीं निकलने पाएगा।

दुर्जन : और यदि निकल गया तो···

सिपाही : बचकर नहीं जाएगा।

कर्मवीर ' शाबाश ! बोलो···

अचानक नट का प्रवेश, गाता है।

नट , लोकतन्त्र जिन्दाबाद जिन्दाबाद
तुमसे जात-पात है आबाद
फिरकापरस्ती है तुमसे बाद,
धर्म और सम्प्रदाय
भाषा क्षेत्रवाद आय
शृंखलकर खड़े हैं इत्तहाद
लोकतन्त्र जिन्दाबाद जिन्दाबाद।

नट का प्रस्थान। नटी पीछे से आती है।

सिपाही . जब तलक हाथ में बंदूक है,

कर्मवीर : जब तलक दिल में उठती हूक है,

युवक : झूठ है। हमने अपना भीतर तोड़फोड़ का, बह भी पूरा नहीं। बाहर कुछ नहीं किया।

सिपाही : यह राजद्रोह है।

कर्मवीर : इसको सजा के लिए मुकद्दमा भी जरूरी नहीं, जानता है?

युवक : जानता हूं। आप बकरी की पूजा इसलिए कराते हो ताकि सब बकरी बन जाएं। मैं बकरी नहीं हूं। किसी को बकरी नहीं बनूंगा।

सिपाही नहीं माने तू भेड़िया है।

कर्मवीर : और भेड़िया खुला नहीं छोड़ा जाता। दीवान जी, इसे तब तक जेल में सड़ाओ जब तक बकरी न बन जाए। हथियार बरामद कराओ थाने के पास से।

सिपाही एक हाथ मारता है और बेरहमी से उसे घसीट बाहर छोड़ आता है। दुर्जनसिंह का प्रवेश। वह खादी छोड़कर कीमती कपड़ा पहने है। आते ही आराम कुर्सी पर लेट जाता है। पैर सिपाही की गोद में रख देता है। सिपाही एक जाम भर कर देता है।

सिपाही :
तमाम हिरनी तमाम रम
मिला करे प्रभु जनम जनम
हो संग कलेजी गरम गरम
औ' एक बाला नरम नरम।

दुर्जन : वाह, वाह दीवान जी क्या बात है! अब तुम पक्के शायर हो गए।

सिपाही : यह शायरी मेरी नहीं। यह तो मेरे बाप-दादों के जमाने से चली आ रही है। वे अंग्रेज हाकिमों के साथ बड़े ओहदों पर थे। पुराना सिलसिला है हुजूर। हर ओहदेदार सिपाही

इसे जानता है।

दुर्जन : जानता होगा। (एक सांस भरकर) पर तुम्हारे पुराने सिलसिले मे भी जायका है। हमारा नया] सिलसिला भी बेस्वाद होता जा रहा है। (कुछ रुककर)

न कोई शान बाकी है
न कुछ अरमान बाकी है,
मगर फिर भी दरो दौलत पे
तेरी जान बाकी है।

(बकरी के स्थान की ओर देखकर) तो फिर, फतह कर्मवीर ?

कर्मवीर : हां, फतह समझो। विद्रोही के बच्चे चू भी नहीं कर सकते। सब हमें वोट देंगे। सिरफिरो को ठिकाने लगा दिया गया।

सिपाही : अब भी जिस पर शुबहा होगा वो घर से नहीं निकलने पाएगा।

दुर्जन : और यदि निकल गया तो···

सिपाही : बचकर नहीं जाएगा।

कर्मवीर : शाबाश ! बोलो···

अचानक नट का प्रवेश, गाता है।

नट , लोकतंत्र जिन्दाबाद जिन्दाबाद
तुमसे जात-पात है आबाद
फिरकापरस्ती है तुमसे शाद,
धर्म और सम्प्रदाय
भाषा क्षेत्रवाद वाद
भूलकर खड़े हैं इत्तहाद
लोकतंत्र जिन्दाबाद जिन्दाबाद।

नट का प्रस्थान। नटी खींच ले जाती है।

सिपाही . जब तलक हाथ में बंदूक है,
कर्मवीर : जब तलक दिल में उठती

गए तो स्वर्ग दिया दे। हम सब शाकाहारी हैं। बकरी शरणम् गच्छामि।

सिपाही बकरी खोलकर ले जाता है, मंच पर धीरे-धीरे पूरा अंधेरा छा जाता है।

(दृश्यलोप)

नट गायन

जिसकी लेते हैं शरण उसको ही खा जाते हैं लोग,
जिसका थामा हाथ, उसका ही लगा जाते हैं भोग,
मुंह से निकला नाम, जैसे पेट से निकली डकार,
वह भी मजबूरी हो जैसे, वह भी ज्यूं बेअख्तियार,
जिसका झंडा हाथ में है वह समाया पेट मे
जिसका डंडा हाथ मे है वह समाया पेट में
पेट ही बस पेट निकल आ रहा है देश का,
कोई बतलाए भी आकर क्या करूं इस क्लेश का।

नटों का नाचते गाते प्रवेश।

नटी : मंजीरा ढोल बजाओ
चलो कुछ नाचो गाओ
दिखाओ कर रहे हैं धंधा हम भी पेट का।

नट : उचक्के इतने सारे
निकलते मुंह अंधियारे
भरोसा किसको रह गया है अपनी टेंट का।

दूसरा दृश्य

[एक जुलूस नारे लगाता आता है 'जीत गया भाई जीत गया, बकरी वाला जीत गया', कर्मवीर जिंदाबाद। जुलूस कंधों पर कर्मवीर को बैठाए मंच की परिक्रमा करता है। फिर चला जाता है। कुछ ग्रामीण रह जाते हैं। युवक का दूसरी ओर से प्रवेश।]

युवक : कहाँ बाबा जिता दिया?

एक ग्रामीण : सब रामजी की माया है। तुम जेहल से छूट के आय गए बचवा?

युवक : हाँ, एक और जेहल से।

दूसरा ग्रामीण : और कौन जेहल, बचवा?

युवक : आप लोगों का मकान जेहल ही है, अब ये जीत के और लूटेंगे, पहले बकरी का नाम लेकर लूटते थे अब आपका ही नाम लेकर लूटेंगे।

तीसरा ग्रामीण : हमारे पास लूटे को काव धरा है?

पहला ग्रामीण : बाढ़ आई सब बह निकला गया। गाँव में एक छप्पर भी नहीं बचा।

दूसरा ग्रामीण : सूखा पड़ा ऐसन कि अन्न का एक दानो नहीं।

युवक : बकरी मैय्या की कृपा से खेत नहीं लहलहाए, पानी जमीन

फोड़कर नहीं निकला ?

तीसरा ग्रामीण : कहूं कछू नाहीं, हमरै अभाग।

विपती का चीखते हुए प्रवेश।

विपती : खा गए, हाय उसे खा गए। (युवक को देखकर जोर से रोने लगती है) अब हम काव करी बाबू।

युवक : क्या हुआ विपती ?

विपती : अबहिंजे हम देखा, सिपाही ओहका कसाई अस सहर लिहे जात रहा, ऊ चिल्लात रही।

एक ग्रामीण : ऊ आसरम मे होई ?

युवक : अब न वह होगी और न आसरम होगा। अब आसरम को उन्हें क्या जरूरत है, जो पाना था पा गए।

दूसरा ग्रामीण : एस नाही होय सकत।

तीसरा ग्रामीण : आसरम मे जरूर होयगी अस जुलुम नाही होय सकत। कौनो और बकरी होई जेहका सिपाही लिहे जात होई, तू चीन्हा नाहि न।

विपती : अरे ! हम अन्हरी होय गएन। ऊ कसाई, तू सब कसाई। अब हम काव करी ! *रोने लगती है।*

पहला ग्रामीण : चलो चलिकै देख स्यो।

दूसरा ग्रामीण : कहू, देखै देत है ?

तीसरा ग्रामीण : पुछा ही तो पता चलि जाई कि आसरम मे है कि नाही।

ग्रामीणों का प्रस्थान। विपती और युवक एक कोने में खड़े रह जाते हैं। मंच पर उन्हें छोड़कर शेष अंधेरा छा जाता है। कल्पना दृश्य : दूसरे कोने पर वही नंगे भूखे ग्रामीण बकरी का थान उठाए खड़े हैं। हरहराती बाढ़ की आवाज। वे थान को और ऊंचा उठाते जाते हैं जैसे पानी बढ़ता जा रहा है। फिर थान के चारों ओर

नट गायन

जिस धून से शहरों में मची रंगरेलियां
जिन छप्परों के बल पे खड़ी हैं हवेलियां
उस आदमी को आदमी वो मानते नहीं
जब काम निकल जाता है पहचानते नहीं,
उसकी बिवाइयों से चला रेलगाड़ियां
उसके ही चीथड़ों से पहन सूट साड़ियां
उसके ही पेट पर जला के जश्न का चिराग,
कहते समाजवाद है 'जो देश जाय जाग।'

तीसरा दृश्य

[भोज का दृश्य। शेरवानी में गुलाब लगाए एक बड़े नेता और उनके साथ एक नेत्री आती है। सब खड़े हो जाते हैं बाहर दो पुलिस के आदमी बंदूक लिए तैनात हैं।]

दुर्जन : बहुत कम लोग यह जानते हैं, आज हम जो हैं वो किसकी बदौलत? किसने हमें जनसेवा की ओर लगाया? हमारी आँखें खोलीं? हमें सही रास्ता दिखाया? किससे हमने हमेशा प्रेरणा ली? अपना कर्तव्य किया और आगे बढ़े। हमने खून पसीने से इस धरती को, इस देश की धरती को सींचा है और ऐसी घास उगाई है जो हमेशा हरी-हरी रहेगी और युगों तक चरे जाने पर भी खत्म नहीं होगी। (सभी लोग तालियाँ बजाते हैं।) आज ऐसे मौके पर जब हमारे सपने कुछ साकार हुए हैं हम उसे सम्मानित करना नहीं भूल सकते जिसकी बदौलत हम यहाँ हैं।

सिपाही भिश्ती को लेकर आता है। घुटने तक तहमद बाँधे, सिर पर गांधी टोपी लगाए, पीठ पर मशक। कुछ कुछ शक्ल गांधी की जैसी।

दुर्जन : बाबर ने, नहीं माफ़ कीजिएगा हुमायूँ ने, जान बचाने पर

एक भिश्ती को एक दिन के लिए बादशाह बना दिया था। हम गरीब देश के गरीब सेवक हैं बादशाह नहीं। हमारे पास ताकत नहीं। फिर भी हम कृतज्ञता स्वरूप इस भिश्ती को एक नई धोती, एक नई मशक के लिए भेंट करते हैं।

सिपाही थाल लेकर आता है और वह भिश्ती को दे दी जाती है।

दुर्जन : कभी इस भिश्ती की आवाज में जादू थी। इसकी आवाज में हम गान्धी दिखाता था, देहात बताता था। हमारा विचार है इसकी आवाज में अभी भी कुछ असर हो सकता है। ऐ भिश्ती गाओ…

सभी लोग : गाओ… गाओ!

सिपाही डंडे से भिश्ती को ठेलता है। भिश्ती गाता है।

भिश्ती :
बकरी को बड़ा दया का मालक बन के रहेगी
आगे जिसके चूमों में भी कुछ न कहेगी।
उसके ही लहू के रंग से इतराएगा गुलाब
दे उसको मौत आएगी हर दिन नवाब बनाव।
चाहे वो कोतवाल हो, वजीरी हो या सिरदार
चमका के धनी आएगी हर एक का रोजगार।

सिपाही : (एक लात मारकर उसी की धुन से धुन मिलाता है।)
जा भाग यहां से बना फिरता है चोबदार!

भिश्ती थाल लिए जाने को मुड़ता है।

दुर्जन : कुछ और गाओ भिश्ती। क्या वही पुराना राग अलापते हो!

भिश्ती : हमें तो यही आता है सरकार। लड़का हमारा जरूर कुछ नया सीखे है।

दुर्जन : बुला लाओ उसे। इस उत्सव के मौके पर नई पीढ़ी को जरूर हम सुनेंगे।

भिश्ती का प्रस्थान।

दुर्जन : यह हमारा सौभाग्य है कि कर्मवीर जी भारी बहुमत से संसद के लिए चुन लिए गए हैं। हमारी उनसे प्रार्थना है कि वे इस मौके पर…

कर्मवीर खड़ा होता है। सब तालियां बजाते हैं।

कर्मवीर : आप सब आए, यह हमारे लिए खुशी की बात है। यह धरती एक चरागाह है जिसकी घास जितना ही रौंदो उतना ही पनपती है। हमें यकीन है कि हम आप सब मिल कर इस हरियाली को खत्म नहीं होने देंगे। अपने-अपने चौपाये खुले छोड़ दीजिए। चरें, मस्त रहें। फिक्र की कोई बात नहीं। कभी-कभी लगता है कोई अकेला नहीं जीतता। एक की जीत सब की जीत होती है। सब एक साथ जीतते हैं। सब एक साथ खड़े होते हैं, एक साथ लड़ते हैं। (तालियां) इससे लड़ाई आसान हो जाती है। चौपाया अपने जबड़े से एक घास नहीं कुतरता। दांत होते ही इसलिए हैं कि काटते चबाते समय गिना न जाए। खुशी की बात है कि अभी हम गिन नहीं रहे। इसलिए खुशियों की कमी नहीं। खाने के सामान की भी कमी नहीं है। कभी-कभी कमी हो जाती है। घास सूख जाती है। यह चरागाह का धर्म है। इसकी पहचान हमें रखनी है। शुरू कीजिए, उस हरियाली के नाम पर जो हमारी है और रहेगी (तालियां) उस दांत के नाम पर जो, काटते समय गिनते नहीं, चाहे वे बकरी के ही क्यों न हों। (तालियां) यही नियम है, दांत तेज और मजबूत हों, घास हरी और कोमल हो, फिर धरती चरागाह से ज्यादा कुछ नहीं हो पाएगी। शुरू कीजिए, हम जनता, इस चरागाह के नाम पर…

(लोग खाना शुरू करते हैं तभी विपती का लड़के के साथ प्रवेश।)

दुर्जन : यही है तुम्हारा लड़का विपती?

भिश्ती : हाँ हुजूर।

दुर्जन : (दूसरों को खाने की प्लेट बढ़ाता है) गाओ भइयो, कुछ फड़कता हुआ गाना।

सब खाने लगते हैं। फड़कता गाना है। उनके साथ और लोग आकर शामिल हो जाते हैं।

बकरी हमको बना दिया।
बकरी की में-में ने
सब कुछ सहना सिखला दिया।
बकरी की में-में ने।

छोटी से छोटी रस्सी से भी
हर खूटे के साथ
बंधकर रहना सिखला दिया
बकरी की में-में ने।

कांटों में लगी पत्तियाँ भी
खाने के लिए
दर-दर फिरना सिखला दिया
बकरी की में-में ने।

इक टहनी के इशारे पर
हर कसाई के साथ
चुप चुप जाना सिखला दिया
बकरी की में-में ने।

सींगें भी हैं चलने वाली
छुरी के वास्ते,
यह तक हमको भुलवा दिया
बकरी की में-में ने।

लाला जी औ' नेता जी सब के
ऐश-ओ-अमन पे
बोटी-बोटी कटवा दिया
बकरी की मे-मे ने।

हर बोल बज रहे है
हमारी ही खाल के
फिर भी यह सुर मिलवा दिया
बकरी की मे-मे ने।

दुर्जन : (खाते हुए) यह क्या मे-मे लगा रखी है!

युवक : (गरजकर) अब यह मे-मे नहीं होगी। बांधो इन लुटेरों को। इन्कलाब जिन्दाबाद।

सभी उन्हें घेरकर रस्सी से बांध देते हैं।

(दुर्जन समेत सभी) अरे! अरे यह क्या हम तो सेवक है भाई, जन सेवक। हम पर दया करो।

सब गाते हैं। नट नटी आगे आ जाते हैं।

दिन मे दो रोटी के हों अब देश मे लाले पड़े
हों सभी खामोश सब की जबा पर ताले पड़े,
दिल दिमाग औ' आत्मा पर इस कदर जाले पड़े,
सूबे की शतरंज नेता खेलें दिल काले पड़े।
तोद आड़ियल पिचके पेटो पर चलाए गोलिया
हर तरफ फिर न निकलें क्रांतिकारी टोलिया,
फिर बताओ किस तरह खामोश बैठा जाए है
अब तो खौले खून रह-रह कर जबा पर आए है—
बहुत हो चुका अब हमारी है बारी,
बदलके रहेंगे ये दुनिया तुम्हारी।
[समाप्त : पर्दा]

•••

मुद्रक : प्रगति प्रिंटर्स, दिल्ली-३२